बाप की प्रवेशता

प्रातः क्लास 24-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। जिन बच्चों ने गीता का अभ्यास किया है अच्छी तरह से वह हाथ उठावे। अभी उस में लिखा हुआ है श्री कृष्ण भगवानुवाचः पहले2 तो यह मुख्य पॉयन्ट्स हैं। बच्चे जानते हैं भारत सदगति को पाया हुआ था। कौन सी सदगति? यह (ल०ना०) चित्र है ना। बच्चे जानते हैं आज से 5000वर्ष पहले जबसतयुग था भारत में तो इन ल०ना० का राज्य था। अभी है कलियुग। जब भारत में इनका राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। आज से 5000वर्ष पहले सूर्यवंशी का राज्य था। फिर चन्द्रवंशियों का राज्य हुआ। भारत यही देवी देवताओं का राजस्थान था। और कोई राज्य नहीं थी। यह पढ़ाई है भक्ति नहीं। भक्ति में पढ़ाई नहीं होती। पढ़ाई ज्ञान में होती है। यज्ञ तप-दान-पुण्य आद करना भक्ति है। बहुत भक्ति करते आते हैं। फिर भगवान को आना पड़ता है। भक्ति का फल देने। भक्तिपूरी होती है कलियुग अन्त में। अर्थात जब पुरानी दुनिया का अन्त होता है। फिर भगवान आकर नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कर देते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं बरोबर जब आदी सनातन देवी-देवता धर्म श्रेष्ठ की स्थापना होती है तो दूसरा कोई धर्म होता ही नहीं। अभी तो अनेक धर्म हैं। आदी सनातन देवी-देवता धर्म है नहीं। सिर्फ चित्र हैं। यह है सच्ची। गीता जो भक्ति मार्ग में पढ़ते आये हैं वह तो जानते हैं श्री कृष्ण-वाच नहीं है। नहीं है। यह है भगवानुवाचः। अभी भगवान किसको कहा जाता है, भगवान कितने हैं। यहां तो कोई कहते ईश्वर एक है कोई कहते हैं 24अवतार लेते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। तो गोया वह कच्छ-मच्छ का बच्चा भी हुआ। यह तो गालियां देते हैं ना। बाप समझाते हैं मुझे कैसे गालियां देते हो। कौन कहते हैं? शिव भगवानुवाचः। सर्व की सदगति दाता वह शिव बाबा ही है। वह खुद समझाते हैं मीठे2 बच्चों अपने को आत्मा समझो। शरीर नहीं समझो। श्रेष्ठ भक्तिमार्ग में वा रावण राज्य में तुम अपने को शरीर समझते आये हो। इसको कहा जाता है देह-अभिमान। बाप समझाते हैं देह-अभिमानी बनने से तुम नर्कवासी बनते हो। मैं फिर आकर तुमको देही-अभिमानी बनाता हूं। अपने को आत्मा समझो। आत्मा अविनाशी है। वह एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। तो यह पढ़ाई है। यह कोई वह सतसंग नहीं। वह तो सभी झूठे सतसंग तुम जन्म-जन्मान्तर करते आये हो। पहले2 तो श्रीमद्भगवद्गीता जो है उसको खण्डन कर दिया है। वास्तव में होना चाहिए भगवानुवाचः। ऊंच ते ऊंच भगवान वह निराकार परमपिता परमात्मा शिव ही है। कृष्ण को परमपिता नहीं कहेंगे। परमपिता है ही एक निराकार भगवान। यह भी बाप ने समझाया है दो बाप होते हैं। एक लौकिक और पारलौकिक। एक से हद का वर्सा मिलता है दूसरे से बेहद का वर्सा मिलता है। लौकिक बाप को परम पिता नहीं कहेंगे। परम कहा जाता है सुप्रीम को। ऊंच ते ऊंच भगवान। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आता हूं पतित दुनिया को नई दुनिया बनाने। यह है बाप का अलौकिक कर्तव्य। जो और कोई कर न सके। बाप बैठ बतलाते हैं गीता में यह बड़ी ते बड़ी भूल कर दी है जिससे ही भारतवासी नर्कवासी बने हैं। बापतुम बच्चों को अमृत बनाते हैं। जिससे तुम फिर स्वर्गवासी बनते हो। आज से 5000वर्ष पहले इन (ल०ना०) सूर्यवंशियों का राज्य था। फिर चन्द्रवंशी राज्य हुआ। स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है। त्रेता को कहेंगे सेमी स्वर्ग। अथवा रामराज्य। क्योंकि दो कला कम जाती है ना। तो यह पढ़ाई है। जो और कोई पढ़ा न सके। न वेदों-शास्त्रों में ही यह पढ़ाई है। बाप समझाते हैं वह सभी है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग को दिन सतयुग त्रेता कहा जाता है। भक्ति-मार्ग है द्वापर कलियुग। भक्ति के अंधियारे रात गेंधाके खाते हैं। द्वापर कलियुग है अंधियारा मार्ग। किसका अंधियारा? प्रजापिता ब्रहमा मुखवंशावली ब्राहमणों की रात। फिर प्रजापिता ब्रहमा मुख वंशावली ब्राहमणों का दिन है। सतयुग-त्रेता। दिन को स्वर्ग कहा जाता है फिर है सेमी स्वर्ग। क्योंकि दो कला कम हो जाती है। फिर द्वापर में रावण राज्य शुरु होता है। रावण कौन है यह भी किसको पता नहीं। रावण का पुतला बना कर जलाते हैं, जरूर दुश्मन है। दुश्मन का हीदूत बना कर आग लगाते हैं ना। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है। तुम जानते हो पहले2 प्रवृति मार्ग था। फिर वह 84 जन्म लेते2 नीचे आये हैं। जो सूर्यवंशी थे उन्हों ने ही

[illegible] किया। सूर्यवंशी इतने जन्म फिर चन्द्रवंशी इतने जन्म। बाप ने समझाया है तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। जिस में प्रवेश करता हूं वह भी अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। इह शिव बाबा बैठ समझाते हैं। [illegible] को शिव बाबा कहा जाता है। कृष्ण को बाबा नहीं कहा जाता। न भगवान कहा जाता है। भगवान है ही निराकार बाप। उनकी महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है। ज्ञान का सागर पतित पावन कृष्ण को नहीं कहा जाता। परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शान्ति का सागर, सभी का सागर है। यह महिमा बेहद के बाप की है। हद के मां बाप बच्चे आदि सभी उनकी महिमा गाते हैं। परन्तु समझते नहीं हैं। यहां बेसमझों को बेहद के बाप से बेहद की समझ मिलती है। मिली थी तब तो यह ल०ना० बने। फिर 84 जन्म ले बेसमझ तमोप्रधान बने हैं। फिर आ बाप आये हैं सतोप्रधान बनाने। बाप बैठ पढ़ाते हैं। यह है परमपिता परमात्मा की युनिवर्सिटी। जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ग्रन्थ में भी महिमा गाई हुई है ना। नानक को गुरु कहते हैं परन्तु बाप ने समझाया है सिवाय एक सद्गुरु के गुरु कोई होता ही नहीं। भक्ति-मार्ग के अनेकानेक गुरु हैं। तुमको मालूम है। [illegible] गुरु तुम किसको कहते हो, जो स्त्री और बच्चों को बन्धन और निर्बन्धन बनाते हैं। आसक्त बनाते हैं। [illegible] कौन है? सन्यासी। वह घर-बार छोड़ते हैं तो स्त्री विधवा बन पड़ती। बाप के सिवाय बच्चे निधन के [illegible] इस समय सभी हैं विधवायें निर्धन के। फालोअर भी वास्तव में कोई है नहीं। यह झूठ बोलते हैं कि [illegible] के फालोअर हैं। खुद भी सन्यासी धारण करें तो फालोअर कहे जायें। वह सन्यासी और वह गृहस्थी टट्टू। [illegible] तीन पवित्र को फालो करे वह कैसे हो सकता। वह पावन तुम पतित फिर फालोअर कैसे ठहरे। पवित्र बनो [illegible] फालोअर कहो। परन्तु पैसे के भूखे सच्च तो जानते ही नहीं। सच्च कहने वाला है एक बाप। बाप ही आकर [illegible] सच्च बताते हैं। सत्यना० की कथा सुनते हैं। क्या वह सच्ची है? तुम नारायण बनते हो? बिल्कुल नहीं। यहां [illegible] आये हो यह (ल०ना०) बनने लिए। भक्ति-मार्ग में तुम सदा झूठी कथायें सुनते आये हो। शंकर ने पार्वती को अमर कथा सुनाई। परन्तु वह तो सूक्ष्मवतन में है यहां कहां से आये। यह भी झूठ है ना। कलियुग को कहा जाता है नर्क। सतयुग है स्वर्ग। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। उनको फिर भी कहा जाता है। अधूरा। क्योंकि [illegible] आत्मा पुरानी हो गई। आत्मा जो पवित्र होती है वही अपवित्र बन जाती है। यहां बातें आते ही हैं [illegible] जो इस ज्ञान को समझ सकते हैं। बाहर वाला समझ न सके। क्योंकि यह है नई बात। गीता का ही एपि- [illegible] जब कि पुरानी दुनिया बदल नई दुनिया होती है। स्वर्ग अक्षर कहने से ही मुख पानी हो जाता है। आजकल मरते हैं तो कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। तो क्या नर्क में था? परन्तु इतना भी अकल नहीं है। इस [illegible] कहा जाता है पत्थर बुद्धि। यह है कांटों का जंगल। एक दो को कांटा मारते रहते हैं। काम कटारी चलाते रहते हैं। जबसे रावण राज्य शुरू हुआ है तो एक दो पर काम कटारी चलाते आये हैं। अभी बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। यह रावण सभी का दुश्मन है। तब तो जलाते हैं ना। परन्तु मनुष्यों को पता थोड़े ही है। बिल्कुल पत्थर बुद्धि हैं। बड़े2 प्राईम मिनिस्टर आज भी रावण को जलाते हैं। पता कुछ भी नहीं है कि यह कौन है। आसुरी गवर्मेन्ट है ना। दैवी गवर्मेन्ट होती है सतयुग में। आसुरी गवर्मेन्ट होती है कलियुग में। यह (ल०ना०) स्वर्ग के गवर्मेन्ट देखो कितनी ऊंची हैं। कितनी उन्हीं की महिमा है। विलायत वाले भी कहते हैं लार्ड कृष्णा। गाडेस राधे। परन्तु भारतवासियों को कुछ भी पता नहीं है। भारतवासी ही भूले हुये हैं। यह भी नहीं जानते कि ऊंच ते ऊंच [illegible] भगवान तो होता है निराकार। कृष्ण कोहम कैसे सकते। कृष्ण तो दैवी गुणों वाला मनुष्य है। जो 84 जन्म लेते2 आसुरी गुणों वाला बनते हैं। यह बातें तुम बच्चे अभी समझते हो। फिर तुम स्वर्ग में चले जाते हो। तो यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। वहां इन शास्त्रों आदि की भी दरकार नहीं। अभी तुम बेहद के बा- से बेहद का वर्सा लेते हो। शिव जयन्ति भी मनाते हैं। परन्तु एक भी मनुष्य नहीं जिसको पता हो कि शिव बाबा कब आये, क्या आकर किया, स्वर्ग नर्क किसको कहा जाता है इनको कहा जाता है वैतरणी। विषय सागर में गोते खाते रहते हैं। स्वर्ग सतयुग को, नर्क कलियुग को कहा जाता है। नर्कवासी कलियुगवासी ठहरे। स्वर्गवासी

तयुगवासी। यह निर्विकारी है ना। इन्हों की महिमा गाते हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी। यह किसने कहा? सम्पूर्ण विकारी
। अपन को कहते हैं सम्पूर्ण विकारी हैं, आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो। दुनिया बदलती है ना। सम्पुर्ण निर्विकारी सतयुग
सम्पूर्ण विकारी हैं कलियुग में। इसमें फिर 84 जन्म लेनी पड़ती है। मनुष्य फिर कह देते 84 लाख। बाप कहते हैं
4 लाख जन्म मनुष्य लेते नहीं हैं। भगवान खुद कहते हैं मेरी कितनी ग्लानी कर दी है। मुझे कह देते सर्वव्यापी
। कण-कण, भित्तर ठिक्कर में हैं। बेहद का बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं वह राजयोग सिखाते हैं उनको सब
जाप्ती अनगिनत जन्मों में डाल दिया है। बाप कहते हैं जब भारत में जब ऐसी पत्थर बुधि नर्कवासी वेश्यालय
मनुष्य बन जाते हैं। ठिक्कर-भित्तर कण कण में भगवान कह देते, कितनी ग्लानी करते हैं। पहले कहते 24 अवतार
वतार। फिर कहते युगे2 आते हैं फिर कहते वह तो सर्वव्यापी है। मनुष्य में भी फिर कह देते कुत्ते बिल्ले में हैं।
ह मनुष्यों की मति हो गई है। अभी बाप आकर सभी की गति सदगति करते हैं। सतयुग में सभी की सदगति
ोती है। उसमें सिर्फ तुम थोड़े रहते हो। अभी तो अनेक धर्म है।

त्रिमूर्ति भी है, परन्तु उन से शिव को अड़ाये बाकी ब्रहमा विष्णु शंकर को रख दिया है। लिखा हुआ भी है
हमा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना। परन्तु करन-करावनहार का नाम ही गुम
र दिया है। गवर्मेन्ट का भी होना चाहिए त्रिमूर्ति परन्तु त्रिमूर्ति कौन है यह किसको भी पता नहीं है। क्या
स्थापना करते हैं भारत को स्वर्ग बनाते हैं। अकेला थोड़े ही होगा। तुम सभी ब्रह्मा कुमार-कुमारियां हो ना।
न द्वारा स्वर्ग की स्थापना होती है। बाप सभी को कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से जगत
ीत बनेंगे। तुम बच्चे आते ही हो बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने। 2। जन्म सुख पाते हो। फिर रामराज्य
सीढ़ी नीचे ही उतरते हैं। रावण राज्य में सभी विषय सागर में गोता खाते हैं। शिवालय में कोई भी गोता
हीं खाते। तुम बच्चे अभी समझ गये हो। बाप को कहा जाता है नालेज फुल ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का
जरूप। वृक्षपति। वृक्षपति को मनुष्य बृहस्पत कह देते हैं। बृहस्पत की दशा बैठती है ना। अभी तुम पर बृहस्पत
दशा है। तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो फिर रावण आते हैं तो राहू की दशा बैठ जाती है। आधा कल्प
वृक्षपत की दशा। आधा कल्प होती है रावण राहू की दशा। वेश्यालय बन जाता है। बाप शिवालय बनाते
। वेश्यालय रावण बनाती है। इन सभी बातों को मनुष्य नहीं जानते। वह है ही शुद्र सम्प्रदाय।
म हो ब्राहमण सम्प्रदाय। ब्राहमणों की चोटी होती है ना। तुम को भगवान पढ़ाते हैं देवी-देवता बनाने
र। वर्ण भी है ना। 84 जन्म ऐसे होते हैं। ब्राहमण वर्ण को कोई चित्र में दिखाते नहीं हैं। चोटी के ऊपर
है शिव बाबा। उनको भी दिखाते नहीं हैं। मूर्ख है ना। गीता पढ़ते हैं शुरू में ही है कृष्ण भगवानुवाच:। बाप कह
हते हैं बिल्कुल रांग है। राईट है शिव भगवानुवाच। कहां शिव कहां कृष्ण। शिवकी तो अथाह महिमा है।
ान का सागर है सुख का सागर है जिससे वर्सा मिलता है। यह है सर्व गुण सम्पन्न ... सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा
त्तम अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म। अहिंसा अर्थात काम कटारी नहीं चलाते। बुलाते ही हैं हे पतित-पावन
ओ। हमको आकर पावन दुनिया का मालिक बनाओ। तो कृष्ण थोड़े ही पतित पावन हो सकता। पतित-पावन
ही एक बाप। बाबा ने यह भीष्मशाया है बाप होते ही हैं दो। एक लौकिक दूसरा पारलौकिक। आदी सनातन तो
वी देवता राज्य करते थे अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य। यह है अनलाफुल राज्य। इनको सावरन्टी
हीं कहेंगे। उन्हों को यह पता नहीं है सावरन्टी किसको कहा जाता है। गाया कुछ नहीं जानते। कहते रहते हैं
भ्रष्टाचारी दुनिया है। अच्छा इसको अभी भ्रष्टाचारी कौन बनावे? या कहते हैं शान्ति चाहिए। विश्व के शान्ति
। विश्व इस दुनिया को कहा जाता है। जहां तुम रहते हो। शान्तिधाम को थोड़े ही विश्व कहेंगे। वहां से तुम आते
यहां पार्ट बजाने। विश्व में शान्ति थी जब कि इनका राज्य था। विश्व में शान्ति स्थापन करना कोई मनुष्य
काम नहीं है। यह सभी को पीस प्राइज देते रहते हैं। बाबा कहते हैं तुम विश्व में शान्ति स्थापन करते हो।

तो तुमको प्राईज़ मिलती है विश्वकी बादशाही। वहां पवित्रता सुख शान्ति भी है। सतयुग को कहा जाता है सुख - - - धाम। जहां से आत्मायें आती है वह है निर्वाणधाम। और यहह दुःखधाम। घर घर में मनुष्य दुःखी होते हैं। हेल्थ मिनिस्टर, एड्युकेशन मिनिस्टरफ्लाना मिनिस्टर कितने ढेर हैं। यह क्या करेंगे। बाप तो तुमको 21 जन्मों लिए एवर हेल्दी बनाते हैं। वहां विकार होता ही नहीं। सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया कहा जाता है। यहां है सम्पूर्ण विकारी। सो भी बहुत विकारी बातें कृष्ण पर जाकर डाली है। 16108 रानियां थी। यह तो उनको विकारी बना दिया। इतनी रानियां फिर कहां से लाई। कुछ भी पता नहीं। वह तो छोटा बच्चा वह फिर ज्ञान का सागर हो सक्ता कैसे हो सकता। बाप समझाते हैं तुम ही पारस बुधि थे फिर तुम ही पत्थर बुधि बने हो। स्वर्गवासी नर्कवासी कैसे बनते हैं, विश्व का मालिक कैसे बनते हो फिर बेगर कैसे बनते हो यह तुम्हारी बुधि में है। भारत कितना धनवान था। सोमनाथ का मंदिर भक्ति-मार्ग में बनाया है। मंदिर तो ढेर थी। परन्तु कैपीटल पर ही चढ़ाई की। कितने माल ले गये। अभी तो कंगाल बन पड़े हैं। भीख मांगते रहते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम विश्व के मालिक बनते हो। फिर सालवेन्ट इनसालवेन्ट भी भारत ही बनती है। पूज्य सो पुजारी। बाप कहते हैं मैं तो सदैव ही पूज्य हूं। मुझे जन्म-मरण में क्यों ले जाते हो। देह का अहंकार कितना है। हमको यह महल है, मोटरें हैं हम बहुत ही शाहुकार हैं। बाप कहते हैं यहां तो शाहुकार है वह फिर स्वर्ग में गरीब बनेंगे। मैं हूं गरीब निवाज़। शाहुकार लोगों के लिए यहां स्वर्ग है। बाप कहते हैं तुम अपने स्वर्ग में सुखी रहो। मैं आकर गरीबों की सेवा करता हूं। मुझे बुलाते भी हैं हम पतितों को आकर पावन बनाओ। अभी मैं जरूर किसके तन में आऊंगा। जरूर रथ चाहिए मनुष्य का। बाकी घोड़ा वा बैल का थोड़े ही रथ लेंगे। मैं आ हीउन में हूं जिसका बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। उन में प्रवेश कर यह नालेज देता हूं। जिससे तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। ज्ञान खलास हो जाता। फिर गीता कहां से आई। यहफिर मनुष्यों ने बैठ बनाई है। पहले नम्बर में भूल है यह। पाण्डवों कौरवों की लड़ाई है नहीं। यह तो है युनिवर्सिटी। भगवानुवाचः मैं तुमको ऐसा बनाता हूं। इनको कहा ही जाता है गीता पाठशाला। क्या बनने का है? यह (ल०ना०) ज्ञानसागर पतित पावन बाप तुमको पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। यहराजाई स्थापन होती है। तुम ब्राह्मणों द्वारा आदी सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। यहपुरानी दुनिया के अनेक धर्म सभी विनाश होनी हैं। एक धर्म की स्थापना हो जावेगी। एक धर्म था, जिसको 5000 वर्ष हुये फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट होगी। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। वह है स्वीट सायलेन्स होम। मूल बात बाप बच्चों को कहते हैं हे बच्चों अपन को आत्मा समझो। देह के धर्म छोड़ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म सभी भस्म हो जावेंगे। उनको योगअग्नि कहा जाता है। योगसे तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम फिर सतोप्रधान बन जावेंगे। वर्ल्ड कीहिस्ट्री जागराफी ऐसे रिपीट होती है। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम श्रीमत पर आदी सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़मामेकं याद करो। विनाश सामने खड़ा है। मरना तो सभी को है। सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। तो तुम बच्चों को रास्ता बताना चाहिए। वह तो यह भी नहीं जानते निर्वाणधाम वानप्रस्थ किसको कहा जाता है। पत्थर बुधि हैं ना। अभी तुम सभी को जान कर पारस बुधि बनते हो। पत्थर बुधि से पारस बुधि, पारस बुधि से पत्थर बुधि कैसे बनते हो सो बाप बैठ समझाते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

मन्मनाभव